॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम्॥ १ ॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ २ ॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ ३ ॥

सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम्॥ ४ ॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।
चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम्॥ ५ ॥

भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम्॥ ६ ॥

महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
परं ब्रह्मसद्व्यापकं भजे ह राममद्वयम्॥ ७ ॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम्॥ ८ ॥

रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यं
व्यासेन भाषितमिदं श‍ृणुते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९ ॥

॥ इति श्री-व्यासविरचितं श्री-रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:
http://stotrasamhita.net/wiki/Ramashtakam.
generated on **November 23, 2025**
Downloaded from http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits